प्रवाह

(काव्य संग्रह)

श्री नवमान पब्लिकेशन्स साहित्य
अलीगढ़ दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण अथवा ऐसे ढंग से भंडारण, जिससे यह पुनः प्राप्त किया जा सके या स्थानान्तरित किया जा सके। ऐसे सभी कृत्य पूर्णतया वर्जित हैं और लेखक की बिना पूर्व लिखित अनुमति के किसी भी अन्य रीति से इनको प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

काव्यधारा 'प्रवाह' में संग्रहित प्रत्येक काव्य की शुचिता व मौलिकता की प्रमाणिक बचनबद्धता प्रत्येक कवि द्वारा पूर्णरूपेण प्रदान की गयी है।

किसी भी वाद–विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र अलीगढ़ (उ.प्र.) ही रहेगा।

■ © प्रकाशक

■ संस्करण : जून, 2023
ISBN : 978-93-87607-56-9

■ मूल्य : 200/– रुपए मात्र

■ शब्द सज्जा :
अनामिका ग्राफिक्स, अलीगढ़

■ मुद्रक :
नवमान ऑफसेट प्रिन्टर्स, अलीगढ़

■ प्रकाशक :
श्री नवमान पब्लिकेशन्स साहित्य
नवमान सदन, मदार गेट, अलीगढ़–202 001 (भारत)
मोबा.: +91 8430555522, +91 9358251032, +91 8755055551
ई–मेल : navmanoffset@rediffmail.com,
shreenavmanpublication@gmail.com

संरक्षक

विमल कुमार

संकल्पना

शिवम सिंह

संपादक

रमेश यादव 'सागर'

विशेष सहयोग

सुरभि सिंह

अनंत अनुराग यादव

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद

संरक्षक

काव्यधारा, हृदय से निकली विचार शब्दों की वह निर्मल धारा होती है जिसके शीतल प्रवाह से न सिर्फ कवि हृदय को आनन्द एवं उल्लास की अनुभूति होती है बल्कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की पथ प्रदर्शक भी होती है। सदियों से जब-जब मानव में किसी शक्ति के प्रभाव अथवा दबाव में प्रत्यक्ष अपनी बात कहने का साहस कम हुआ, तब-तब काव्य-धारा ने सर्जक कबीर, तुलसी, रहीम, रसखान के रूप में मानवता को दिशा देते हुए समाज को जगाकर साहस देने का काम किया। फिर चाहे वीभत्स, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, श्रृंगार, अद्भुत, शान्त और भक्ति जैसे हृदयस्पर्शी रसों का सहारा क्यों न लेना पड़ा हो। ऐसे ही काव्यधारा के सर्जक सभी शिक्षक भाई-बहनों को मिशन शिक्षण संवाद परिवार नमन करता है जिन्होंने अपने विचारों को शब्द देकर शिक्षा के उत्थान, शिक्षक के सम्मान और मानवता के कल्याण के लिए काव्यधारा के प्रवाह के रूप में संकलन को मूर्त रूप देने का सद्कार्य किया है।

मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ।

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद

शिवम सिंह 'शिक्षक'
जौनपुर

संकल्पना

नमस्कार दोस्तों !!

यूँ तो किसी का भी योगदान कमतर नहीं होता ।
फिर भी, कलमकारों के बगैर समाज बेहतर नहीं होता ।।

कलमकार ज्योतिषी तो नहीं, फिर भी वक्त की नब्ज को टटोलना जानता है। एक रचनाकार गुजरे लम्हों तथा गतिमान वक्त के साथ - साथ आने वाले कल की आहट अर्थात अंधेरे में भी आईने को पढ़ने का माद्दा रखता है।

सशक्त संकल्पना काव्यधारा के माध्यम से अगले शिखर सोपान के रूप में हम आपके काव्य सन्देश को एक पुस्तक में पिरोकर निर्मल हृदय से विस्तारित करते हुए अति पुलकित हैं ।

आप से उम्मीदें और आप पे यकीं है ।
आप की तूलिका में समंदर सी नमीं है ।
शब्द सन्देश - भाव भावनाएं सब आपकी,
हमने तो सजायी बस कागज की जमीं है ।

अग्रिम बधाई व शुभकामनाएं आप सभी को...

शिवम सिंह 'शिक्षक'
जौनपुर

रमेश यादव 'सागर'
जौनपुर

सम्पादक

साथियों, सादर अभिवादन !!

कभी ऑनलाइन अंदाज ...
कभी आफलाइन बुलंद आवाज ...
तो कभी सजे कागज की जमीं पे अल्फाज ...

यूं सजती - संवरती काव्यधारा ने काव्य संगोष्ठी के सलोने व बेहद सुहाने सफर को तय करते हुए साहित्य जगत में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया है।

आप सभी के आत्मीय सहयोग से 'काव्यधारा' का नायाब तोहफा "प्रवाह" बुद्धजीवी समाज को सौंपते हुए ' टीम काव्यधारा' अति हर्षित व गर्वित हैं । 'जमाने की निगहबानी' में सौम्य लेखनी के अनवरत

ऊर्जित रहने हेतु सुहृदी शुभकामनाएं...

कोई सूनामी सहर या - तूफानी दोपहर भी आये तो आने दो।
शोलों की बारात लेकर चाहे 'जलधर' भी आये तो आने दो।
'ये स्याही ये नजर' न थके यारों - 'जमाने की निगहबानी' में,
बेशक परख की पराकाष्ठा में - खुद भँवर भी आये तो आने दो।

रमेश यादव 'सागर'
जौनपुर

अनुक्रमणिका

कविताएँ

क्र.सं.	लेखिका/लेखक	–	विषय	पृ.सं.
01.	कृष्धा सिंह 'सृष्टि'	–	सितारों और चाँद के सिवाय	01
02.	राकेश कुमार सिंह 'रत्न'	–	मर्यादा पुरुषोत्तम	04
03.	गीता यादव 'गीत'	–	अब ख्वाहिश न रही	07
04.	अखिलेश पाण्डेय 'अखिल'	–	तब कबीर मुस्काने बैठा	10
05.	सरिता यादव 'सरल'	–	सुघर संवाद दो सखियों का	13
06.	डॉ. रेणु देवी	–	गौरैया की उड़ान	16
07.	जमीला खातून 'खनक'	–	मैं किसान हूँ	19
08.	उत्तमा चतुर्वेदी	–	धरती माँ	22
09.	आलोक श्रीवास्तव 'उज्ज्वल'	–	बसंत ऋतु	25
10.	मीरा कन्नौजिया	–	सब अद्‌भुत	28
11.	सुरेश सौरभ 'गाजीपुरी'	–	वफादार नजर आते हैं	31
12.	श्रीकांत विश्वकर्मा 'अनुपम'	–	बासंती गीत	34
13.	अर्पण कुमार आर्य	–	भारत माता के वंदन को	37
14.	ज्योति सागर 'सना'	–	तुम पारस हो	40
15.	अजय विश्वकर्मा 'शान'	–	गज़ल	43
16.	फात्मा बानो 'रुतबा'	–	हाँ मैं लड़की हूँ	46
17.	वंदना श्रीवास्तव	–	जिंदगी	49
18.	पवन भारती 'वायु'	–	हौसला जीने के लिए	52
19.	पूनम गुप्ता 'कलिका'	–	अपना जमाना था	55
20.	ओम प्रकाश श्रीवास्तव ओम'	–	प्यारा भारत वर्ष	58
21.	हेमलता गुप्ता	–	हिंदी से है हिंदुस्तान	61
22.	शिप्रा सिंह 'प्राशि'	–	ए पथिक तू चलता चल	64
23.	नशा–देश के लिए क़ज़ा	–	रीता गुप्ता	67
24.	सीमा रानी	–	छूकर बुलंदियों को	70
25.	डाँ शालिनी गुप्ता	–	नारी जीवन	73
26.	नूपुर श्रीवास्तव 'नूपुर'	–	कल यादें थी आज परिस्थितियाँ हैं	76
27.	अर्चना पाण्डेय	–	जिंदगी उलझ सी गयी है	79
28.	अनिल अग्रहरि 'सागर'	–	वक्त रहते, जो संभल जायेंगे	82
29.	शीतल सैनी	–	पतझड़	85
30.	रमेश यादव 'सागर'	–	जीवन संगिनी	88
31.	अनुराधा शर्मा 'अनु'	–	प्रभु भक्त संवाद	91
32.	प्रेम तिवारी 'प्रेम'	–	रावण	94

परिचय

शिक्षार्थी

नाम : **कृष्धा सिंह 'सृष्टि'**

जन्म तिथि : 15 सितम्बर
जन्म स्थान : जौनपुर
पिता : श्री शिवम सिंह
माता : श्रीमती पिंकी सिंह
शिक्षा : 10वीं

मोबाइल : 94521 88720
ई–मेल : krisdhasingh150908@gmail.com

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : 'स्टोरी मिरर' द्वारा साहित्यिक कप्तान से सम्मानित मिशन शिक्षण संवाद द्वारा आयोजित ऑन लाइन बाल चौपाल का संचालन

सितारों और चाँद के सिवाय

रात के अंधेरे में,
सितारों और चाँद के सिवाय,
कोई और भी चमकता है ।

हरी भरी घासों में,
टूटे वीरान खण्डहरों में,
वो भी रहता है।
रात को वो भी सुनता है,
पर कौन है वो,
क्या कभी सोचा है?
हरियाली के साथ,
वो भी खुद को हरा दिखाता है ।

तो सरसों के खेत में,
खुद को पीले रंग में रंगता है।
बिना किसी आवाज के,
पंख उठा के उड़ता है।
ठंड को वो भी महसूस करता है।

पर कौन है वो,
क्या कभी सोचा है?
सदियों पहले वो रात के अँधेरे में,
दीये सा चमकता था,
पर आज तो वो खुद चमकने के लिए,
अंधेरे को खोजता है।

भूल गये हैं लोग उसको,
यही है एक प्राणी जुगनू नाम का।
पर उस छोटी–सी जान के बारे में,
क्या कभी सोचा है?

कृष्धा सिंह "सृष्टि"
जौनपुर

परिचय

शिक्षक

नाम : **राकेश कुमार सिंह 'रत्न'**
जन्म तिथि : 03 दिसम्बर 1981
जन्म स्थान : महनपुर, बक्सा, जौनपुर
पिता : श्री चंद्रभुवन सिंह
माता : स्वर्गीया श्रीमती शोभावती सिंह
शिक्षा : बी. ए. , बी. एड.
पत्राचार पता : सुंदर नगर कालोनी, उमरपुर, हरिबंधनपुर, जौनपुर
मोबाइल : 9453381232
ई–मेल : rakeshsinghat@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : 'माँ', 'बेटियाँ', 'आज की दुनिया है कैसी', 'प्रकृति, 'आओ मिलकर दूर करें', 'कलाम को सलाम', 'मेरे प्यारे बच्चो', 'मजदूर, 'मातृ भूमि वंदन', 'राष्ट्रधर्म'

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : अखिल राज्य ऑनलाइन काव्य संगोष्ठी 'परवाज' में काव्य पाठ के लिए सम्मानित, मिशन शिक्षण संवाद द्वारा आयोजित काव्य गोष्ठी में 'काव्यधारा रत्न' से सम्मानित, जन्मभूमि सेवा संस्था द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में 'काव्यधरा शिरोमणि' सम्मान से सम्मानित

मर्यादा पुरूषोत्तम

राम लला की धरती है यह, राम बसे हैं कण–कण में।
चरित राम का धारण कर लें, हम सब अपने जीवन में॥

भेद भाव से रहें परे सब, बुरा किसी का ना सोचें।
दु:ख में सुख में साथ निभाएं, नयन नीर सबके पौंछें।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम, बसे हुए हैं हर तन में।
चरित राम का धारण कर लें, हम सब अपने जीवन में॥1॥

तरी अहिल्या पग से जिनका, जिनके पग केवट धोया।
भ्रातृप्रेम में विह्वल होकर, जिनके लिए भरत रोया।

निश्छल भ्रातृप्रेम होए यह, भाई–भाई के मन में।
चरित राम का धारण कर लें, हम सब अपने जीवन में॥2॥

सबरी के जूठे बेरों में, नेह राम का दिखता है।
माता कौशल्या के जैसा, प्रेम राम को दिखता है॥

पुत्र धर्म की रक्षा खातिर, निकल पड़े निर्जन वन में।
चरित राम का धारण कर लें, हम सब अपने जीवन में॥3॥

नारी रक्षा हेतु जटायु ने, अपना बलिदान दिया।
तात समान मानकर उनको, राम ने है उद्धार किया।

नारी रक्षा ध्यान रहे जग में, हर मानव के मन में।
चरित राम का धारण कर लें, हम सब अपने जीवन में ॥4॥

त्याग, तपस्या सीख रहा है, 'रत्न' राम के चरणों में।
लिखा हुआ है हर ग्रंथों में, रामायण उद्धरणों में॥

सत्य आचरण हम पहुँचायें, भारत के हर आँगन में।
चरित राम का धारण कर लें, हम सब अपने जीवन में॥5॥

राम लला की धरती है यह, राम बसे हैं कण–कण में।
चरित राम का धारण कर लें, हम सब अपने जीवन में॥

राकेश कुमार सिंह "रत्न"
जौनपुर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **गीता यादव ' गीत'**

जन्म तिथि : 16 दिसम्बर
जन्म स्थान : घाटमपुर, कानपुर नगर
पिता : स्व. डा. चेतराम यादव
माता : श्रीमती चन्द्र किशोरी
शिक्षा : M. Sc., B. Ed., M. Phil,, M. C. A.

पत्राचार पता : आराध्य विला, प्लॉट नं. 68, आनंद विहार सोसायटी, गणेशपुर रोड, कोयला नगर, कानपुर
मोबाइल : 90051-77976
ई-मेल : sonasona1978@gmail-com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : : उम्मीद के रंग, कोरोना काल में कविता, आरोपित एकांत, अर्ध सत्य तुम, जान है तो जहान है, प्रकृति के आंगन में

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : राज्य शिक्षक पुरस्कार 2021, कोरोना काल में नवाचार हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार ,आर्ट क्राफ्ट पपेट्री हेतु दो बार राज्य पुरस्कार, उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार, आदर्श पाठ योजना हेतु राज्य पुरस्कार

अब ख्वाहिश न रही

अब ख्वाहिश न रही

किसी को अपना बनाने की,
चाहने की दिल में बसाने की।

अब ख्वाहिश न रही

तुम मिले तो लगा जहाँ मिल गया,
जगह ना रही किसी को अपना बनाने की॥

अब ख्वाहिश न रही

सारे ख्वाब जो अधूरे थे संवर गए,
पंख दिए पर चाह नहीं उड़ जाने की॥

अब ख्वाहिश न रही

उम्मीदें, चाहतें सब हैं तुझसे ही,
तेरे दिल में रहूँ, चाहत नहीं महल सजाने की।

अब ख्वाहिश न रही

अब ख्वाहिश न रही

इबादत में सारी कायनात मांगते हैं लोग,
तू जो मिला दुआ में चाह नहीं कुछ और पाने की।

अब ख्वाहिश न रही

गीता यादव "गीत"
कानपुर नगर

परिचय

शिक्षक

नाम : **अखिलेश पाण्डेय 'अखिल'**

पत्राचार पता : बरिस्ता, उड़ी का डीह, प्रतापगढ़ – 230402 (उ.प्र.)

मोबाइल : 9651061092

ई–मेल : akhilbelhawi@gmail.com

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि :

1. राज्य स्तरीय काव्य गायन पुरस्कार–2019
2. राज्य स्तर कहानी पुरस्कार–2021
3. राज्य स्तर लघु फिल्म निर्माण पुरस्कार–2022
4. प्रयागराज मंडल एकांकी विजेता
5. ऑनलाइन काव्य संगोष्ठी 'परवाज' के सक्रिय सदस्य

तब कबीर मुस्काने बैठा

अपनी पीर नहीं गा पाए
जग की पीर सुनाने बैठा।
रूठ गये जो कोमल सपने
उनको आज मनाने बैठा॥

पढ़-पढ़, लिख-लिख
कागज काले करता रहता था बेचारा,
सारी पोथी पढ़ डाली थी
हर पन्ने का सुख-दुख सारा।
कुटिल काल की कठिन परीक्षा में,
सर्वस्व जँचाने बैठा॥

विकल पथिक अतृप्त प्यास ले
बस्ती-बस्ती नगर टटोले,
कर्मों की माया नगरी में
हाथी-घोड़े-उड़नखटोले से
सम्मोहन के महाजाल के
जग में आग लगाने बैठा॥

मँहगे फोन समय की सुविधा है
इंटरनेट वाई-फाई
देखा सुना बहुत कुछ पाया
पर खुद की कुछ खबर न पायी।
नेटवर्क जब उड़ा अचानक
तब कबीर मुस्काने बैठा॥

अखिलेश पाण्डेय "अखिल"
प्रतापगढ़

परिचय

शिक्षिका

नाम : **सरिता यादव 'सरल'**

जन्म तिथि : 30 जुलाई

जन्म स्थान : रैदासपुर, जौनपुर

पिता : स्व. श्री राजबहादुर यादव

माता : श्रीमती गीता यादव

शिक्षा : एम. ए., बी. टी. सी.

पत्राचार पता : W/o रमेश यादव 'सागर' दुगौली कला, तियरा, बदलापुर, जौनपुर

मोबाइल : 9415653886

ई–मेल : saritasaral3886@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : 'बिकता नहीं सावन' (सुघर संवाद दो सखियों का), 'चला काश्मीर घूमि आई', 'अंगना दुआर', 'सुघर नयन', 'दर्द भरी पाती',' बयार', 'क्यूँ हो गये पराये'

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : 'मिशन शिक्षण संवाद' अन्तर्गत काव्यधारा काव्य मंच द्वारा 'काव्यधारा रत्न सम्मान', शिक्षा रत्न सम्मान, जन्मभूमि सेवा संस्था ककोहिया, जौनपुर द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में मिशन शिक्षण संवाद 'काव्यधारा शिरोमणि सम्मान' एवं 'प्रकृति' मित्र सम्मान।

सुघर संवाद दो सखियों का

बिकता नहीं 'सावन' कहीं बाजार और दुकानों में,
झूले भी पड़ा नहीं करते, सखी अम्बर के ठिकानों में,
बेशक 'पेड़ों' की 'सख्त' डाली चाहिए।
पेड़ों से है जीवन, पेड़ों की हरियाली चाहिए॥

तन्हा पकवानों के दम पे धड़कनें चलाया नहीं करते,
जिन्दा हैं दम पे जिनके उन्हीं को दफनाया नहीं करते,
पेड़ों से ही हवा सखी 'साँसों वाली 'चाहिए।
पेड़ों से है जीवन, पेड़ों की हरियाली चाहिए॥

छत दीवारों का ही कैदी खुद को बनाया नहीं करते,
गीत कजरी भी धूप में बैठकर सखी गाया नहीं करते,
छाया पेड़ों की 'शीतल और आली 'चाहिए।
पेड़ों से है जीवन, पेड़ों की हरियाली चाहिए॥

हम सबकी धरती माँ का– हम सबसे ये कहना है,
वृक्ष ही 'श्रृंगार' मेरा – वृक्ष ही मेरा 'गहना' है,
इस 'माँ' के अधरों की सखी 'लाली' चाहिए।
पेड़ों से है जीवन, पेड़ों की हरियाली चाहिए॥

बोझिल हैं नदियाँ हद से ज्यादा 'कचरा' छूटने से,
लुप्त हो रहे 'खग' कितने पेड़ों का आसरा टूटने से,
फिर से परिन्दों की सखी 'कव्वाली 'चाहिए।
पेड़ों से है जीवन, पेड़ों की हरियाली चाहिए॥

'बादल' भी गरजेगा, 'सावन' भी बरसेगा,
'मौसम' भी महकेगा, 'सागर' भी हरषेगा,
मोहब्बत से सखी 'पेड़ों की बहाली' चाहिए।
पेड़ों से है जीवन, पेड़ों की हरियाली चाहिए॥

सरिता यादव "सरल"
जौनपुर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **डॉ. रेणु देवी,** हापुड़

जन्म तिथि : 09 दिसम्बर
जन्म स्थान : माँगलौर, बुलंदशहर
पिता : श्री राजेन्द्र सिंह
माता : श्रीमती कुसुम लता
शिक्षा : संस्कृत में स्नातकोत्तर व पी.एच.डी., बी.एड.

पत्राचार पता : बी–290 संजय विहार आवास विकास कॉलोनी, मेरठ रोड, हापुड़
मोबाइल : 09358792234
ई–मेल : rs16604@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : लेख व शोध पत्र सहित एक पुस्तक का प्रकाशन

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : शिक्षा के क्षेत्र में राज्य अध्यापक पुरस्कार 2019, ऑनलाइन काव्य संगोष्ठी 'परवाज' की सक्रिय सदस्या

गौरैया की उड़ान

फुदक–फुदक कर आँगन में जब दाना चुगने आती थी।
सुबह शाम की बेला में मैं सुंदर गीत सुनाती थी।

कहाँ गया वो आँगन मेरा?
कहाँ सुबह की वो बेला?
सूरज की किरणों के संग–संग
लगता था अपना मेला।
थी आजादी घर में आऊँ
दाना पानी खा जाऊँ।

चहक–चहक कर नाचूँ गाऊँ
सूना आँगन चहकाऊँ।
बदल गया वो मौसम सारा,
बदल गया रहना–सहना।
पक्के घर के पक्के मन में,
मुश्किल है मेरा रहना।

छूट गए वो आँगन सारे,
कच्चे घर के पक्के भात।
धीरे–धीरे छोड़ रही हूँ,
बीते जीवन की सौगात।

आधुनिक जीवन शैली में मुझको भूल ना जाओ तुम।
छूटे आँगन द्वारे मेरे,
उनको अब लौटाओ तुम।

उठो,चलो अब मिलकर सारे,
लौटाओ मेरी मुस्कान।
आसमान भी हर्षित हो देखे–
गौरैया की उड़ान॥

डॉ. रेणु देवी
हापुड़

परिचय

सेवानिवृत्त शिक्षिका

नाम : **जमीला खातून 'खनक'**

जन्म तिथि : 04 मार्च
जन्म स्थान : झाँसी, उत्तर प्रदेश
पिता : श्री लालखां मुन्शी जी
माता : श्रीमती मकसूदन बेगम
शिक्षा : स्नातक संस्कृत, B.T.C.

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : 'नन्ही उड़ान' (बाल कविताएं), 'गुलाबी साँझ ढल गई' (काव्य संग्रह)

साझा संकलन : भाव सरिता, उंगलियों पर आसमान, इन्नर, प्रभाती, पिता, एहसास, हासिये पर धूप, हमारी शान तिरंगा है, नारी का अस्तित्व, उड़ान, इन्कलाब, गया नहीं बचपन, पल-पल बदलता जीवन, चिरैयन की चहक माटी की महक, अप्पू की रेल

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : दैनिक जागरण सम्मान पत्र, मिशन शिक्षण संवाद सम्मान पत्र, महादेवी वर्मा सम्मान पत्र, शीर्षक साहित्य परिषद भोपाल द्वारा सम्मान पत्र, हिन्दी साहित्य गौरव, दिविक रमेश सम्मान पत्र, रामधारी सिंह दिनकर सम्मान पत्र

मैं किसान हूँ

मेरा देश कृषि प्रधान है और मैं कृषि की जान हूँ।

मैं किसान हूँ, मैं किसान हूँ।

जाड़ा हो या गर्मी हो, या घनी बरसात हो।
अड़िग खड़ा रहता खेतों में चाहे दिन हो रात हो।
धरती पुत्र कहलाता हूँ मैं अपने देश की शान हूँ।

मैं किसान हूँ, मैं किसान हूँ।

मेरे पसीने की बूंदें मिट्टी में मिलकर अमृत बन जाती हैं।
भिन्न-भिन्न अनाज बनकर दुनिया की भूख मिटाती हैं।
इसीलिये दुःख सहकर भी अपने फर्ज पर कुर्बान हूँ।

मैं किसान हूँ, मैं किसान हूँ।

अगर मैं अन्न न उगाऊँ तो देशवासी क्या खायेंगे।
मैं शहरी बाबू बन जाऊँ तो लोग भूखों मर जाएंगे।
मैं ही देश का भविष्य हूँ और मैं ही वर्तमान हूँ।

मैं किसान हूँ मैं किसान हूँ।

पर अब सूखा अतिवृष्टि से मेरा हाल बदहाल हुआ।
भ्रष्टाचारियों के कारण मैं कर्जदार कंगाल हुआ।
आत्महत्या को मजबूर हूँ देश का घायल स्वाभिमान हूँ।

मैं किसान हूँ, मैं किसान हूँ।

मिट्टी में रहता सना हुआ मिट्टी ही मेरी माता है।
मेरा और इस मिट्टी का जन्म-जन्म का नाता है।
'खनक' मैं अन्न-धन की जन-गण का अरमान हूँ।

मैं किसान हूँ, मैं किसान हूँ।

जमीला खातून "खनक"
झाँसी

परिचय

शिक्षिका

नाम : **उत्तमा चतुर्वेदी**

जन्म तिथि : 30 दिसम्बर
जन्म स्थान : वाराणसी, उत्तर प्रदेश
पिता : श्री हरिशंकर चतुर्वेदी
माता : श्रीमती कमला देवी
शिक्षा : एम. ए., बी. टी. सी.

पत्राचार पता : फिरोजपुर, शेरवां, जौनपुर-222131

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : मिशन शिक्षण संवाद साहित्य सम्मान, काव्यधारा रत्न सम्मान

धरती माँ

हे धरित्री तुम्हें प्रणाम...
तुम ही तो हो जगत की प्राण।
तेरी मिट्टी में संरक्षित आज हमारे प्राण॥
कृषक अन्न उपजा कर करता तुझे प्रणाम...
हे धरित्री तुम्हें प्रणाम...

आज अगर हम न चेते तो कल का परिणाम दुखद होगा।
मिट्टी से संरक्षित हर प्राणी का संग्राम दुखद होगा॥
फ्लैट हों या अट्टालिकाएं मिट्टी ही इनका गौरव है।
भले ही रहें नर इसमें मिट्टी बिन तो नीरव है॥

खेतों की मिट्टी नित नए थपेड़े खाती।
इन्हें प्रदूषित होने की बन्द करें परिपाटी॥
मिट्टी है ये मातृभूमि की इसे बचाना शान है।
गेहूं धान चना और आलू हम सबका अभिमान है॥

उनसे पूछो जिन्हें दो वक्त की रोटी नहीं मिलती है।
हमें मिली है तो हम इसके संरक्षण के ऋणी हैं॥
मातृ भूमि का गौरव है ये अपने देश की माटी।
माटी की रक्षा करना है हम सबकी परिपाटी॥

आज संरक्षित कर – पेड़ लगाकर पेड़ बचाकर,
मिट्टी की कटान रोककर कल का सुखद भविष्य संजोएं।
अपनी धरती माँ के प्रति संकल्प आज यह ले लें,
हम अपने जन जन तक संदेश यह पहुँचाएं॥

हे धरित्री तुम्हें प्रणाम...

उत्तमा चतुर्वेदी
जौनपुर

परिचय

शिक्षक

नाम : **आलोक श्रीवास्तव ' उज्ज्वल'**

जन्म–तिथि : 15 मई, 1978
जन्म–स्थान : कानपुर–देहात
पिता : श्री रामसुदर्शन श्रीवास्तव
माता : श्रीमती धीरज कुमारी श्रीवास्तव
शिक्षा : एम. ए. (अंग्रेजी साहित्य, इतिहास)

पत्राचार पता : नगर पालिका रोड, राजेंद्र नगर, पुखरायाँ, कानपुर देहात–209 111 उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 9621241800
ई–मेल : alok223311@gmail.com

सम्मान /पुरस्कार /उपलब्धि : मिशन शिक्षण संवाद सम्मान पत्र, परवाज सम्मान पत्र, काव्यधारा सम्मान पत्र, शिक्षक दिवस सम्मान एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता सम्मान्, आदर्श पाठ योजना 2020–2021, कहानी सुनाओ व आओ कहानी गढ़ें–2021

बसंत ऋतु

ऋतु है बसन्त आई, अब हरियाली छाई।
सरसों के फूल खिले, देखो डाल–डाल हैं ॥

चहके हैं पक्षी सारे, लगते हैं प्यारे–प्यारे।
भौंरे गुनगुनाते देखो, गीत भी कमाल है ॥

धरती भी ओढ़ रही, चादर वो ओस वाली।
चाँदी सा चमके है, चाँद बेमिसाल है ॥

ये इंद्रधनुष जैसा, दिखता गगन पूरा।
सतरंगी रंगों वाला, आया नया साल है ॥

कहीं नाचता मयूर, कहीं गीत कोयल के।
कहीं बहता समीर, मंद–मंद चाल है ॥

तितली भी पी रही है, रस ढूंढ़–ढूंढ़ कर।
हर फूल इतरा के, महका कमाल है ॥

आम की है बौर खिली, उपवन में है मिली।
दिखते गुलाब के तो, गाल लाल-लाल हैं ॥

सोने जैसी बिखरी हैं, सूरज की किरणें भी।
जीवन का नवप्रभात, दिखता ये साल है ॥

आलोक श्रीवास्तव "उज्ज्वल"
कानपुर देहात

परिचय

शिक्षिका

नाम : **मीरा कन्नौजिया**
जन्म-तिथि : 19 फरवरी
जन्म-स्थान : गाजीपुर
पिता : श्री सुबेदार कन्नौजिया
माता : श्रीमती सविता देवी
शिक्षा : गृह विज्ञान (मानव विकास) एम. ए. / एम. एस-सी.
पत्राचार पता : पहाड़पुर कलाँ, गाजीपुर, देवकली, 233306
मोबाइल : 8400707344
ई-मेल : meerakannaujiya123@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : 'हाय रे! शाखा की पत्ती', 'हे नारी तू कैसी महान', 'हम भारत के लोग', 'हाँ! मैं भी फौजी हूँ', 'ऐ भारत माँ के लाल! क्या शान तेरे पहनावे की'

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : काव्यधारा रत्न सम्मान, अखिल राज्य ऑनलाइन काव्य संगोष्ठी, स्टोरि मिरर

सब अद्‌भुत!

ये आकाश, ये पृथ्वी, ये सृष्टि,
सब अद्‌भुत!

कौन जान सका इस शून्य की ऊँचाई, समंदर की गहराई
सब अद्‌भुत!

ये समुंद्र का खारापन,
नदियों की मिठास,
मिट्टी की सौंधी खुशबू,
उस पर बारिश की फुहार
सब अद्‌भुत!

ये हवा का आना,
फिर ना जाने कहाँ ठहर जाना,
सूरज की तपिश,
सितारों का टिमटिमाना
सब अद्‌भुत!

झरने का यूँ झरझराना,
पहाड़ों से उठते धुएँ,
झीलों की शालीनता,
सरोवर की सरलता
सब अद्‌भुत!

सरिता का पथ कभी ना बदलना,
जलधि का जल कभी ना सूखना।
रंग बिरंगी मछलियाँ और पानी में उनका तैरना
सब अद्‌भुत!

जाने किस पत्थर पर रखी पृथ्वी की नींव,
किस माप में मापी ब्रह्मांड की विशालता,
जगत के कटोरे में कंचे रूपी ग्रहों का दौड़ना
सब अद्‌भुत!

किसने बंद किया समुंद्र का दरवाजा,
डांट कर रोक दिया खड़ा रह यहीं,
अब आगे ना जा।
भोर को जगाना, हिम को बरसाना,
कहाँ रखा है ये ओले का भंडार?
सब अद्‌भुत!

किसने दी बिजली को गड़गड़ाहट,
सिंह की दहाड़, मगरमच्छ की कठोर पीठ,
घोड़े का बल उसकी दुलकी चाल
सब अद्‌भुत!

तेरी बुद्धि है अगम्य, तेरा हर काम अद्‌भुत है,
तेरे विचार अनगिनत,
तेरा नाम अद्‌भुत है
तेरा नाम अद्‌भुत है॥

मीरा कन्नौजिया
जौनपुर

परिचय

शिक्षक

नाम : **डा. बुद्धप्रिय सुरेश सौरभ गाजीपुरी**

जन्म–स्थान : रामपुर फुफुआँव, जमानियां, गाजीपुर, उ. प्र.

पिता : श्रद्धेय श्री मारकण्डेय राम

माता : परिनिबुत्ता लीलावती देवी

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी. एड., एम.एड.

पत्राचार पता : रामपुर फुफुआँव, जमानियाँ, गाजीपुर, उ. प्र., भारत

मोबाइल : 9452846472

ई–मेल : sureshdln84@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : साझा संग्रह प्रेम एक तपस्या, प्रबुद्ध काव्य संग्रह, ममतामई माँ, समतावादी काव्य, काव्य पथिक, काव्य क्षितिज, काव्य बसंत, काव्य प्रभात, काव्य नवतरंग, परिवर्तन, पहल, स्पन्दन, स्पंदन–2, अभिनव हस्ताक्षर, उम्मीद का सूरज

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : विद्यावाचस्पति सारस्वत सम्मान, डॉ. भीमराव अंबेडकर रत्न सम्मान, कलम शक्ति सम्मान, कलम वीर सम्मान, कलम गौरव सम्मान, साहित्य दीप सम्मान, भीम रत्न सम्मान।

वफादार नजर आते हैं

सीमा पे सैनिक वफादार नजर आते हैं।
देश के गौरव हालदार नजर आते हैं॥

सोती है मुल्क की जनता तो वे ही जगते हैं।
सच्चे देश भक्ति के किरदार नजर आते हैं॥

मातृभूमि के लिए अपने गृह जो छोड़ दिए।
देखो! ये बहादुर पहरेदार नजर आते हैं॥

देश मुश्किल में ना हो जान हथेली पे रखें।
उनके जज्बे में नव सरदार नजर आते हैं॥

राष्ट्र का तिरंगा कभी झुकने ना देते वे।
देश के असली देवदार नजर आते हैं॥

अपनी सीमा में किसी बैरी को घुसने ना देते।
पराक्रमी सैनिक रंगदार नजर आते हैं॥

वीरता को तवज्जो दे रहा है देश मेरा।
सच मायने में खबरदार नजर आते हैं॥

रहता मलाल उनको देश की बदहाली का।
अपनों के बीच में गद्दार नजर आते हैं॥

तकलीफों के बीच जिसने जीवन को भोगा।
सुरेश स्व लेखन से सेवादार नजर आते हैं॥

डा. बुद्धप्रिय सुरेश सौरभ गाजीपुरी
गाजीपुर

परिचय

शिक्षक

नाम : **श्री कान्त विश्वकर्मा 'अनुपम'**
जन्म–तिथि : 13 जनवरी 1973
जन्म स्थान : बनकटलोदी
पिता : श्री पारस नाथ विश्वकर्मा
माता : श्रीमती शिवकुमारी देवी
शिक्षा : एम.एस–सी. (गणित)
पत्राचार पता : बनकटलोदी, राजाबाजार, जौनपुर, उ.प्र.

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) :
नाटक शान–ए–वतन, चित्तौड़की कली, छोटी बहू, अनोखा कफन, पलकों की छाँव में, बहू हो तो ऐसी, बिखरे मोती, उजड़ा आशियाना, पितृभक्त प्रह्लाद, सतीसुलोचना एकांकी आजादी के दीवाने, दहेज की चिंगारी, बदलतेरिश्ते, अनपढ़ बीवी, पढ़ाई जीवन का आधार, सप्तरंग–250 गीतों का समन्वय

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : सांस्कृतिक परिषद् सवेली सम्मान, नटखट नाट्य कला परिषद सराय बीका सम्मान, श्री दसूराम नाट्य कला परिषद नाट्यप्रतियोगिता प्रथम सम्मान/सर्वश्रेष्ठ निर्देशन, काव्यधारा रत्न सम्मान

बासन्ती - गीत

देखो आई बसंत बहार,
सखी री बड़ो निक लागे।
बहे शीतल सुगंध बयार,
सखी री बड़ो निक लागे॥

फूली मटर झूमे अरहर की फलियाँ।
सोवा, मेथी, पालक, गेहूँ की बलियाँ॥
बाजे कलियन पर अलि के सितार,
सखी री बड़ो निक लागे॥
बहे शीतल .....।

सरसों के फुलवा पर थिरके तितलियाँ।
महमह-महक उठी गउवाँ की गलियाँ॥
झरे अंगना में रस की फुहार,
सखी री बड़ो निक लागे।
बहे शीतल .....।

अमवा बउरी गइले, महुआ कु चाइल।
सगरी सिवनिया में, कुमकुम छिटाइल॥
कुहके कोयल, मचाए धमाल।
सखी रे बड़ो निक लागे॥
बहे शीतल..... ॥

कान्हा को राधा की, सुधिया जब आए।
यमुना तट तब, 'अनुपम' बँसिया बजाए ॥
चली राधा किए सोलह सिंगार,
सखी री बड़ो निक लागे।
देखो आई बसंत बहार,
सखी री बड़ो निक लागे॥
बहे शीतल .....।

श्रीकान्त विश्वकर्मा "अनुपम"
जौनपुर

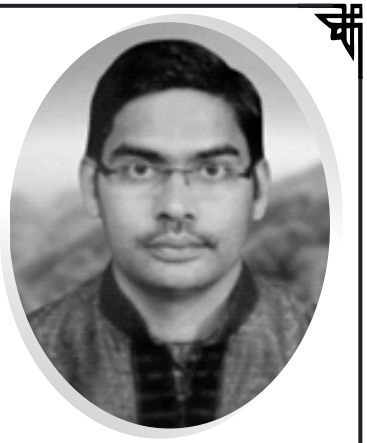

परिचय

शिक्षक

नाम : **अर्पण कुमार आर्य**

जन्म तिथि : 21 मार्च 1983
जन्म स्थान : बरेली
पिता : स्व. श्री पूरन लाल आर्य
माता : श्रीमती प्रेमवती
शिक्षा : B. Tech.
सहा. अध्यापक : उच्च प्राथमिक विद्यालय, लावाखेड़ा
तालिब हुसैन, नवाबगंज, जनपद बरेली

पत्राचार पता : 310 जनकपुरी बी, इज्जत नगर, बरेली
मोबाइल : 9997522060
ई–मेल : arpanarya65@gmail-com

भारत माता के वन्दन को

भारत माता के वन्दन को,
नये राष्ट्र के सृजन को,
हम सबको आगे आना है ।
एक नया राष्ट्र बनाना है ॥

खुशहाली की खेती को,
भारत माता की बेटी को,
मिलकर साथ निभाना है ।
एक नया राष्ट्र बनाना है ॥

तन मन धन समर्पण को,
अपना सब कुछ अर्पण कर,
युवाओं को आगे लाना है ।
एक नया राष्ट्र बनाना है ॥

राम राज्य फिर लाने को,
भारत को शस्य श्यामला बनाने को,
कुशासन हमें मिटाना है ।
एक नया राष्ट्र बनाना है ॥

आतंकवाद मिटाने को,
सुख समृद्धि फैलाने को,
वीरों को जान लुटाना है।
एक नया राष्ट्र बनाना है॥

प्रेम सन्देश फैलाने को,
विश्व में भाईचारा लाने को,
गुरुओं को ज्ञान दीप जलाना है।
एक नया राष्ट्र बनाना है॥

अर्पण कुमार आर्य
बरेली

परिचय

शिक्षिका

नाम : **ज्योति सागर 'सना'**

जन्म तिथि : 24 जनवरी
जन्म स्थान : दिल्ली
पिता : श्री आशा राम सागर
माता : श्रीमती वीरवती सागर
शिक्षा : एम. एस–सी., बी. एड.
पत्राचार पता : C/O Sana, C-10/108 Yamuna Vihar Delhi, 110053
मोबाइल : 8527844194
ई–मेल : muskanjyoti.sana@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : कई साझा संग्रह में भागीदारी, कक्षा–5 की ईवीएस की किताब का काव्य रूपांतरण, अनेकों बाल कविताएं एवं रचनाएँ विभिन्न माध्यमों से प्रकाशित

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : राज्य शैक्षिक संस्थान द्वारा कौरवी भाषा में कविता लिखने के लिए दूसरा स्थान प्राप्त किया, विभिन्न ऑनलाइन और ऑफ लाइन मंचों से सम्मानित

तुम पारस हो

क्या तुम जानते हो माँ के बाद,
सबसे ज्यादा प्यार से दुलारते हो,
मेरे सारे डर, उदासी छू हो जाते हैं,
तुम जब भी मेरा नाम पुकारते हो ।

मैंने बड़े जतन से प्यार का पौधा रोपा,
तुम्हारे दिल की नम जमीं पर ।
तुमने सींचा इसे इतने स्नेह से,
नेह के सुमन उग रहे हैं जमीं पर ।

सर्दियों में धूप जैसा गुनगुना,
गर्मियों में खस या गुलाब जैसा,
बरसात में गीली मिट्टी की खुशबू जैसा,
बसन्त में सूरजमुखी के बाग जैसा ।

मुझे अक्सर सहारा देता है,
तुम्हारे अंदर छुपा ममत्व,
मैं बेहतर हो जाती हूँ, सुन्दर हो जाती हूँ,
जब स्वीकार लेते हो मेरा अस्तित्व ।

इतना दुलार दिया, प्यार किया,
कि भूल गयी दुनिया के सितम,
तुम बिल्कुल पारस जैसे हो,
तुम्हें छूने से सोना हो रहे हैं हम।

ज्योति सागर "सना"
दिल्ली

परिचय

शिक्षक

नाम : **अजय विश्वकर्मा 'शान'**

जन्म तिथि : 11 अगस्त 1979
पिता : श्री श्याम लाल विश्वकर्मा
माता : श्रीमती गुलाबी विश्वकर्मा
शिक्षा : M.A., BTC

पत्राचार पता : गहली, बरसठी, जौनपुर–222162 (उ.प्र.)
मोबाइल : 9451336600
ई–मेल : akvishwa848.gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : विभिन्न पत्र, पत्रिकाओं में गजलें प्रकाशित

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत

गज़ल

उसे तो चलना था दरयाब की रवानी सा,
सिमट के रह गया जो एक बूँद पानी सा।

उसे मुआफ न करने का हश्र मत पूछो,
जमीर जह्व में जिन्दा है बदगुमानी सा।

गज़ल को चूम के पढ़ना कि शेर नाजुक हैं,
सुख़न भी नर्म है रुख़सार ए शादमानी सा।

नदीम बन के उजड़ने से रोक लेता हूँ,
ख़याल उसका मैं रखता हूँ बागवानी सा।

यहाँ से जाते हुए जिन गुलों को चूमा था,
उन्हें संभाल के रक्खा गया निशानी सा।

उसे बबूल समझने की भूल की सबने,
मगर वो महका हुआ गुल है रातरानी सा।

फ़रेब कहते हैं सब उम्र ढल गयी उसकी,
दिखा रहा है वो जलवा अभी जवानी सा।

जिसे सुनाते हुए रूह काँप जाती है,
उसे वो माज़रा लगता है बस कहानी सा।

ख़याल ए यार में शिद्दत से 'शान' जीते हैं,
हर एक पल उन्हें लगता है ज़िन्दगानी सा।

अजय विश्वकर्मा "शान"
जौनपुर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **फात्मा बानो 'रूतबा'**

जन्म तिथि : 15 जुलाई
जन्म स्थान : प्रयागराज
पिता : जनाब गुलाम नबी ख़ान
माता : श्रीमती कमरुन निसा
शिक्षा : स्नातक, उर्दू बी.टी.सी.

पत्राचार पता : 61, Paltan Bazar, Pratapgarh
मोबाइल : 8543965638
ई–मेल : fk3809186@gmail.com

हाँ मैं लड़की हूँ

हाँ मैं लड़की हूँ
वो लड़की,
जो जब जन्म लेती है
तो माँ की निगाहें शर्म से झुक जाती हैं,
जाने क्यों,
वो मेरे ही पिता से नजरें नहीं मिला पाती
जानें क्यों, जाने क्यों...
हाँ मैं लड़की हूँ.....।

वो लड़की,
जो बचपन से सुनती है
आहिस्ता बोल, तू लड़की है,
यहां मत जा,
ये मत कर,
अरे! ये क्या पहन लिया,
तू लड़की है
जाने क्यों, जाने क्यो...
हाँ मैं लड़की हूँ

वो लड़की,
जिसे ये समाज
आजादी से जीने का अधिकार ही नहीं देता,
राह चलते, कुछ भी बोल देना
अपना फर्ज़ समझता है,
जाने क्यों, जाने क्यों....
हाँ मैं लड़की हूँ.....।

वो लड़की,
जो पुरुषों के समाज में,
अपनी पहचान बनाती है,
कुछ करके दिखाती है,
फिर भी घबराती है,
जाने क्यों, जाने क्यों.....॥

फात्मा बानो "रुतबा"
प्रतापगढ़

परिचय

शिक्षिका

नाम : **वन्दना श्रीवास्तव**

जन्म–तिथि : 10 दिसम्बर
जन्म–स्थान : देवरिया (गोरखपुर) उ. प्र.
पिता : स्व. अंजनी कुमार श्रीवास्तव
माता : श्रीमती माधुरी श्रीवास्तव
शिक्षा : एम. ए., बी. एड.

पत्राचार पता : श्री नवीन कुमार श्रीवास्तव 131–सी, कैलाशपुरी, हुसैनाबाद, जौनपुर
मोबाइल : 9161225525
ई–मेल : vandana.jnp1976@gmail.com

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : नारी शक्ति सागर सम्मान, काव्यधारा सम्मान, काव्यधारा शिरोमणि सम्मान, प्रतिभाशाली कवियित्री सम्मान

जिन्दगी

एक शब्द याद आया जिन्दगी,
कुछ पल मुस्कुराते रहे सोचकर,
क्या है फलसफा?
जो हर किसी के समझ से परे है।

सब कहते कैसी पहेली है,
क्यों बन गयी ये पहेली?

खुद को सुलझाने की कोशिश थी,
क्या पता था उलझ जाने की कोशिश थी।
तिनके तिनके से छत संवारने की कोशिश,
खुशियों से गम को मिटाने की कोशिश,
हसीन ख्वाब बना देने की कोशिश,
जमीं पर स्वर्ग बनाने की कोशिश।
किसी को जीत लेने की कोशिश,
किसी से जीत जाने की कोशिश,
किसी को प्यार देने की कोशिश,
किसी से हार जाने की कोशिश।

कुछ सिमट गया बस यादों में ये जिन्दगी,
कुछ टूट गया राहों में ये जिन्दगी
कुछ बिखर गया निगाहों में ये जिन्दगी
कुछ खत्म हो गया ख्वाबों में ये जिन्दगी।

कभी सावन की फुहार जिन्दगी,
कभी प्यार की बरसात जिन्दगी,
कभी इन्द्रधनुषी रंग जिन्दगी,
कभी–कभी नायाब जिन्दगी।
हंसते चेहरे सी अरमान जिन्दगी,
गिरते आंसू का पैगाम जिन्दगी,
नवजात शिशु का रूदन आगाज जिन्दगी,
राम नाम सत्य है अंजाम जिन्दगी।

है कश्मकश ये जिन्दगी,
ना रश्म है ये जिन्दगी,
जीत गये तो आशीर्वाद है जिन्दगी,
कहीं अभिशाप भी है जिन्दगी।
जिन्दादिली का नाम है जिन्दगी,
किसी के आये काम ये जिन्दगी,
एक सफर का नाम है जिन्दगी,
चाहे बिखरे तमाम हर शाम जिन्दगी।

वन्दना श्रीवास्तव
जौनपुर

परिचय

शिक्षक

नाम : **पवन भारती 'वायु'**
जन्मतिथि : 15 जुलाई, 1994
जन्म–स्थान : बसेला, दातागंज (बदायूँ)
पिता : श्री मुनीश
माता : श्रीमती जयश्री
शिक्षा : एम. एस–सी., बी. टी.सी.–2017
पत्राचार पता : बसेला, पुरेनी (दातागंज),
बदायूँ–243635 (उ. प्र.)
मोबाइल : 7017520537
ई–मेल : pawanbharti150794@gmail-com

प्रकाशित कृतियाँ : माँ की ममता, प्यारी होली, अम्मा आने दो स्कूल, बारिश, पानी है अनमोल

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि: काव्यधारा रत्न, मिशन शिक्षण संवाद द्वारा उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान –2021, टीम स्वरांजलि द्वारा विद्यालय रत्न पुरस्कार, मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रकृति मित्र पुरस्कार, शिक्षा रत्न पुरस्कार, काव्यांजलि योग/टीएलएम टीम द्वारा प्रशस्ति पत्र सम्मान –2021

हौसला जीने के लिए

जब टूट चुका हो मन ही मन,
जब छूट चुका हो धन ही धन।

जब बिखर गया हो रंग ही रंग,
जब मुकर गया हो संग ही संग॥

तब मन को करके शीतल तुम,
तब धन को करके सीमित तुम।

तब रंग को करके एक तुम,
तब खुद को करके संग तुम॥

जीवन में देखो आशाएँ भी,
कहती है देखो गाथाएँ भी।

धैर्य है सबसे सच्चा मित्र,
धैर्य है सबसे अच्छा मित्र॥

मन ही मन अभिलाषा लेकर,
नित आगे बढ़ते रहना तुम।

हृदय में नई उमंग लेकर,
नित-नई कहानी लिखना तुम॥

पवन भारती "वायु"
बदायूँ

परिचय

शिक्षिका

नाम : **पूनम गुप्ता 'कलिका'**

जन्म–तिथि : 01 दिसम्बर
जन्म–स्थान : कासगंज
पिता : श्री प्रमोद कुमार गुप्ता
माता : श्रीमती रीता रानी
शिक्षा : M.A., B. Ed., B. T. C.

पत्राचार पता : नंद राधा राम मेंशन, मानिक चौक, अलीगढ़ (उ. प्र.)
मोबाइल : 9756214241
ई–मेल : pnmvkg@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : मिशन शिक्षण संवाद में विभिन्न कविताएं

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : राज्य स्तरीय प्रतियोगिता सम्मान काव्य गायन, कहानी गढ़ो व कहानी सुनाओ प्रतियोगिता

आना जमाना था

बदली बदली लगे दुनिया, कभी अपना जमाना था।
आज सिस्टम वफे का है, कभी पत्तल पर खाना था॥
आज चौटिंग मोबाइल पर, रात दिन है फकत यारो।
पहले नजरें मिला के, मुस्कुरा के, दिल चुराना था॥

गली कूचे भटकते थे, लेकर पैगाम दिलबर का।
आज गूगल पर मिल जाए, पता मेरे यार के घर का॥
कभी चूल्हे की रोटी की खुशबू, सौंधी सी मन भाती।
आज जिव्हा को चटकारा लगा, पिज्जा और बर्गर का॥

आज उड़ते हवाओं में, कभी तांगे बदलते थे।
आज दौड़ाते स्कूटी, कभी साइकिल पर चलते थे॥
निकल आए कितने आगे, छोड़ पीछे जमाने को।
जहाँ रोशन है एलईडी, दिए मिट्टी के जलते थे ॥

कभी इन रास्तों के साथ थीं, कुछ झोंपड़ी यारों।
आज उनकी जगह, अट्टालिकायें हैं खड़ी यारों॥
ठहाके मारते पल पल, बैठ करते थे जो गपशप।
बैठ पाते नहीं वो एक, फुर्सत की घड़ी यारों॥

पूनम गुप्ता "कलिका"
अलीगढ़

परिचय

शिक्षक

नाम : **ओम प्रकाश श्रीवास्तव 'ओम'**

जन्म–तिथि : 06 फरवरी, 1981
जन्म–स्थान : तिलसहरी, कानपुर नगर
पिता : श्री अश्वनी कुमार श्रीवास्तव
माता : श्रीमती वेदवती
शिक्षा : परास्नातक

पत्राचार पता : तिलसहरी, कानपुर नगर (उ. प्र.)
मोबाइल : 99351–17487
ई–मेल : ompkavi@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : साझा संकलन – चाँद पर इश्क, मेरे हमसफर, कृष्णलीला, 2021 के अनुपम दोहे, भारत के अशोक चक्र विजेता एवं 5 अन्य

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : अशोकचक्र सम्मान, काव्य श्री सम्मान, काव्य रत्न सम्मान, मदनमोहन मालवीय सम्मान, हिंदी गौरव रत्न सम्मान–2023, राष्ट्रभाषा सम्मान, आदर्श शिक्षक सम्मान आदि।

प्यारा भारतवर्ष

राम कृष्ण की है जन्मस्थली,
प्यारा भारत वर्ष नाम है।
संस्कारों की शिक्षा देना,
जिसका पावन नित्य काम है॥

पर्व यहाँ के सारे अनुपम,
देते प्रीत का मधु संदेश।
भाव सभी का सदा एक है,
मिटे जग से सारा ही क्लेश॥

ऐसी पावन भू-जननी को,
करता जगत सतत प्रणाम है।
संस्कारों की शिक्षा देना,
जिसका पावन नित्य काम है॥

बैर भाव मानव का दुश्मन,
फिर भी मानव क्यों रखता है।
माया के पीछे वह दौड़े,
संस्कारों को नहि लखता है॥

पूजन करता राम कृष्ण का,
पर भूला देव पैगाम है।
संस्कारों की शिक्षा देना,
जिसका पावन नित्य काम है॥

भारत महिमा निज हो रक्षित,
बहे प्रेम की सच्ची धारा।
विनय 'ओम' यह करता सबसे,
यही लक्ष्य हो प्रबल हमारा॥

सत शिक्षा ऐसी पाए जग,
कि हर बालक स्वयं राम है।
संस्कारों की शिक्षा देना,
जिसका पावन नित्य काम है॥

ओम प्रकाश श्रीवास्तव "ओम"
कानपुर नगर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **हेमलता गुप्ता 'हेमा'**

जन्म–तिथि : 25 फरवरी
जन्म–स्थान : कासगंज (एटा)
पिता : श्री प्रमोद कुमार गुप्ता
माता : श्रीमती रीता रानी
शिक्षा : बी.ए., बी.एड., बी.टी.सी.
पत्राचार पता : कासगंज (एटा)
मोबाइल : 9457005440
ई–मेल : hemlatagupta6969@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : ई–पुस्तक 'ज्ञान गुल्लक' में कविता, गोवा राज्य पर दोहे एवं चौपाइयों (इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज), मिशन शिक्षण संवाद अंतर्गत संस्कृत (कक्षा 5) का काव्य रूपांतरण, कई सामूहिक संकलन में रचनाएँ व 150 बाल कविताएं

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : मिशन शिक्षण संवाद 'अनमोल रत्न' सम्मान, उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान, हिन्दी पखवाड़ा काव्य गोष्ठी सम्मान (NCERT दिल्ली)

राज्यस्तरीय प्रतियोगिता :
ब्रज भाषा काव्य प्रतियोगिता, कॉमिक्स प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता, आदर्श पाठ योजना, शैक्षिक लघु फिल्म प्रतियोगिता आदि में सम्मान

हिन्दी से है हिन्दुस्तान

हिन्दी से है मेरी आन,
हिन्दी से है मेरी शान।

हिन्दी से है मान देश का,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान॥

जग में जब आया इंसान,
हिन्दी से ही मिला सम्मान।

हिन्दी से पहचान हमारी,
हिन्दी से है देश महान॥

वीर करण श्रंगार रौद्र रस,
सभी रसों की है यह खान।

सभी अलंकारों से विभूषित,
बढ़ा रही है सबका मान॥

भारत के माथे की बिन्दी,
सबसे जरूरी आज है हिन्दी।

हिन्दी को तो भूल गया जो,
ना होगा तेरा सम्मान॥

तुलसी, सूर, कबीरदास जी,
महादेवी, मीरा, रसखान।

एक से बढ़कर एक कवि हैं,
हिन्दी ही है इनकी जान॥

जब तक है यह हिन्दुस्तान,
हिन्दी से है इसका मान।

जब तक रहूँ मैं इस धरा पर,
हिन्दी है मेरा अभिमान॥

हेमलता गुप्ता "हेमा"
एटा

परिचय

शिक्षिका

नाम : **शिप्रा सिंह 'प्राशि'**

जन्म–तिथि : 08 अगस्त
जन्म–स्थान : कानपुर नगर
पिता : श्री राजेन्द्र बहादुर सिंह
माता : श्रीमती प्रेमा देवी
शिक्षा : B. Sc., M. Sc. M. A. BTC
पत्राचार पता : 116/420B आदर्श नगर, रावतपुर गाँव, कानपुर नगर–208019
मोबाइल : 9455229686, 6386706850
ई–मेल : singhshipra008@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : मिशन शिक्षण संवाद, विश्व हिंदी लेखिका मंच–2021 एवं समाचार पत्र में लेख, रचनाएँ प्रकाशित

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : मिशन शिक्षण संवाद द्वारा शिक्षक सम्मान, आजादी का अमृत महोत्सव, उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान–2022, कर्म योगी सम्मान–2021, नारी गौरव सम्मान–2022

ए पथिक तू चलता चल

ना घबरा तू राहों से ए पथिक तू चलता चल,
राह में कांटे आएंगे तो इनको ही तू चुनता चल॥
पथरीली राहों पर तू अपनी राह बनाता चल,
सफलता तेरे कदम चूमेगी यह बात तू सुनता चल॥

हँसता रोता राहों पर तू चलता चल,
जीवन के अँधियारों को तू बस मिटाता चल।
होगी राह कठिन मगर, तू मत घबरा चलता चल,
राह की ठोकरों को तू भूलकर बस चलता चल॥

अगर रुठे तेरा साया फिर भी तू चलता चल,
खुद पर कर विश्वास बस तू चलता चल।
ढूँढ़ रही खुद मंजिल तुझे बस तू चलता चल,
मिलेगी एक दिन मंजिल तुझे बस तू चलता चल॥

सपनों की उम्मीदों को तू बस बुनता चल,
निराशा के बादलों को तू बस छाँटता चल।
पांव की बेड़ियों को तू काटता चल,
ऐ पथिक तू चलता चल बस चलता चल॥

शिप्रा सिंह "प्राशि"
कानपुर नगर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **रीता गुप्ता**

जन्म–तिथि : 05 दिसम्बर
जन्म–स्थान : सहारनपुर
पिता : श्री कान्ति प्रसाद गुप्ता
माता : श्रीमती कमला देवी
शिक्षा : परास्नातक (अंग्रेजी, शिक्षाशास्त्र), बी.एड. तथा दूरस्थ बी.टी.सी.

पत्राचार पता : बेहट, सहारनपुर
मोबाइल : 8006499394
ई–मेल : reetagupta2712@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : हाशिए पर धूप (सांझा काव्य), कोरोना काल में कविता (सांझा काव्य), प्रकृति के आंगन में (सांझा आलेख व कविता), ई–काव्य पुस्तक बोलता बचपन तथा रीता की कविता

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : अनमोल रत्न सम्मान, जिला स्तर पर उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार, नवाचार के क्षेत्र में पुरस्कार, कविता पाठ हेतु सम्मान, हमारी टीम फैमिली ऑफ ब्लड डोनर्स ट्रस्ट जरूरतमंद लोगों के लिए रक्तदान कराने का कार्य करती है। रक्तदान के क्षेत्र में चिकित्सा विभाग द्वारा सम्मान प्राप्त, ब्लॉक तथा जिला स्तर पर सामाजिक कार्यों हेतु सम्मान

नशा–देश के लिए क़ज़ा

लोगों के स्वार्थ का नशा,
गली–गली यूँ महक रहा।
छोड़ पढ़ाई कैरियर–वैरियर,
देश का युवा है बहक रहा॥

मात–पिता को पढ़ाके पट्टी,
प्रतिदिन पैसा ऐंठ रहे।
ड्रग्स, अफीम, चरस के चस्की,
महफिल में मिलकर चहक रहे॥

भूल रहे हैं लाल जननी को,
पिता के अरमान कुचल रहे।
बर्बादी की राह पे जाने को,
कैसे ये नादाँ मचल रहे॥

भारत के भाग्य का निर्माता,
भारत का भाग्य बिगाड़ रहा।
था जिसे भारत को चमकाना,
वो ले नशे की आड़ रहा॥

युवाओं की दुर्दशा के पीछे,
क्या दोष सिर्फ युवा का है।
रुपयों की खातिर बेचता जो जहर,
उस देशद्रोही की सजा क्या है?

क्यूँ आँखें मूंदे बैठा है तंत्र
क्यूँ चलता कोई चाल नहीं।
क्या ये भी कमीशन खाता है,
क्यूँ रोकने की मजाल नहीं?

क्यूँ नशे के खिलाफ सरकार मेरे,
कानून सख्त नहीं बनाते हो?
क्यूँ जहर बेचने वालों को,
सीधा तिहाड़ नही पहुँचाते हो?

जो भी नशे का कारोबार करे,
हो नेता या उद्योगपति।
ना रियायत मिले सजा में कोई,
तभी रुकेगी राष्ट्र की क्षति॥

किताबी शिक्षा के साथ-साथ,
बच्चे संस्कारों का पाठ पढ़ें।
ऐसी हो अपनी शिक्षा प्रणाली,
बच्चे खुद सही गलत का फर्क करें॥

ना मिले बच्चों को अनुचित पैसा,
ना बिगड़ा लाड-दुलार मिले।
मात-पिता निभाएं कर्तव्य,
बच्चों के बन मित्र रहें॥

हरपल बच्चे के मन में बस,
माँ का चित्र समाया हो।
जब भी कभी कदम बहके,
पिता का संग में साया हो॥

देश का गौरव गान सुनाना,
हर विद्यालय में अनिवार्य हो।
भारत को विश्व गुरु बनाना,
हर नौजवान का कार्य हो॥

नशा चढ़े तो सिर्फ सफलता का,
नशा हो देश की मोहब्बत का।
मिटा डालो ऐसे नशे को सब,
जो ड्रग्स का हो या हो अफीम का॥

रीता गुप्ता
सहारनपुर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **सीमा रानी शर्मा**
जन्म तिथि : 15 जून
जन्म स्थान : मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)
पिता : श्री सत्यपाल सिंह
माता : स्वर्गीय श्रीमती कौशल्या देवी
शिक्षा : M.A., B. Ed.
पत्राचार पता : HN-D/39 बुध विहार, निकट दिगंबर जैन मंदिर, नई दिल्ली-110086
मोबाइल : 8368595454
ईमेल : raniseema028@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : भारत की बेटियाँ और हिंदी की अलख जगाऊँगी 'भारत काव्य पीयूष' में एवं अन्य रचनाएँ पुस्तक- गीत मंजरी, श्रद्धा सरोवर, कलम ही पहचान है, उन्नति पथ, मधुर बेला व चेतना बाल मन की उड़ान में।

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : मिशन शिक्षण संवाद-2021 में शिक्षा रत्न सम्मान, अखिल राज्य ऑनलाइन काव्य संगोष्ठी परवाज की ओर से प्रशस्ति पत्र, हिंदी पखवाड़ा समारोह अंतर्गत काव्य गोष्ठी में सम्मानित, हिन्द वीर सम्मान, राज्य हिंदी संस्थान उ. प्र. वाराणसी के द्वारा सम्मानित

छूकर बुलंदियों को

छूकर बुलंदियों को एक मिसाल बन जा

चाल–ढाल बदली तूने
अब तू भी बदल जा
हौसले कर बुलंद आगे निकल जा
छूकर बुलंदियों को एक मिसाल बन जा
चाल–ढाल बदली तूने अब तू भी बदल
जा.....

बाबुल के घर में रही
सहमी–सहमी सी रही
लड़कों के पीछे तू कतार में खड़ी रही
बेड़ियों को तोड़ अब आगे निकल जा
छूकर बुलंदियों को एक मिसाल बन जा
चाल–ढाल बदली तूने अब तू भी बदल
जा.....

घर की चारदीवारी में करती पढ़ाई थी
पढ़ने के लिए तूने कितनी लड़ाई की
पाना है अपना हक बाहर निकल जा
छूकर बुलंदियों को एक मिसाल बन जा
चाल–ढाल बदली तूने अब तू भी बदल
जा.....

जो भी हुनर है तुझमें उसको बाहर निकाल
करना पड़े जो भी जतन जला दे एक मशाल
दिखा के अपने जलवे एक जवाब बन जा
छूकर बुलंदियों को एक मिसाल बन जा
चाल– ढाल बदली तूने अब तू भी बदल
जा.....

रास्ते में रुकना नहीं किसी के आगे झुकना नहीं
बढ़ते रहे कदम पीछे तुझे हटना नहीं
अबला से सबला की ओर तू निकल जा
छूकर बुलंदियों को एक मिसाल बन जा
चाल –ढाल बदली तूने अब तू भी बदल
जा.....

पढ़ती जाए लड़कियाँ बढ़ती जाए लड़कियाँ
लड़कों से भी आगे निकल जाएं लड़कियाँ
फर्क ना रहे दोनों में ऐसा कमाल कर जा
छूकर बुलंदियों को एक मिसाल बन जा
चाल ढाल बदली तूने अब तू भी बदल
जा.....

सीमा रानी शर्मा
नई दिल्ली

परिचय

शिक्षिका

नाम : **डॉ. शालिनी गुप्ता**

जन्म तिथि : 05 अप्रैल
जन्म स्थान : जनपद जौनपुर
पिता : स्व. श्री विनोद कुमार
माता : श्रीमती राजेश्वरी गुप्ता
शिक्षा : एम. एस–सी., एम. एड., पी–एच. डी.

पत्राचार पता : I–175,हिंडालको कॉलोनी, रेणुकूट, सोनभद्र
मोबाइल : 9838266455
ई–मेल : shalinigupta1003@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) :
साझा संकलन कोरोना काल में कविता, स्मृतियों की छांव में, राष्ट्र साधना के पथिक, प्रकृति प्रेम

सम्मान / पुरस्कार / उपलब्धि :
जनपद स्तर पर, राज्य स्तर पर, ब्लॉक स्तर पर शैक्षणिक / साहित्यिक पुरस्कार

नारी जीवन

नारी जीवन मजबूर क्यों?
इक प्रश्न चिन्ह? मानवता पर
ऐसी भी क्या मजबूरी है
जन्म दिया जिसने जीवन
जीवन जीना मजबूरी है
हर युग में छली गई नारी
अपमान सहा प्रतिकार हुआ
सबके छलने का रूप अलग था
जीवन दुरुह दुश्वार हुआ
हर पग–पग पर इस जग में
नारी की क्या मजबूरी है
रिश्तों में घुटना घुटते रहना
फिर भी जीना बहुत जरूरी है
आजादी तो मिली मगर
भावों से ना आजाद हुए
पल पल बिखरे सपनों की खातिर
क्यों हर पल हम बर्बाद हुए
बचपन बीता सुन–सुन कर यह
घर नहीं है तेरा बेटी ये
तू है वो पराया धन जिस पर
दूजे का है अधिकार भरा
फिर भी वो नारी तपती है
ममता का मूल सिखाती है

रावण ने कभी छला उसको
कभी कंस के द्वारा छली गई
झांसी की रानी बन लड़ी थी वो
अपनों के हाथों छली गई
ऐसी भी क्या मजबूरी है
हर युग में नारी छली गई
जब जनक नंदिनी सीता को
इस क्रूर समाज ने ना छोड़ा
फिर तू तो वो अबला है जिसका
इस समाज ने भ्रम तोड़ा
ये पाखंडी समाज क्यों भूले है
ये नारी ही अंबा माँ गौरी है
फिर अबला बनकर जीने की
यह परंपरा क्यों जरूरी है
जब तक इस धरा पर द्रौपदी
जानकी को ठुकराया जाएगा।
हर युग एक रामायण लिखेगा
महाभारत दोहराया जाएगा॥

डॉ० शालिनी गुप्ता
सोनभद्र

परिचय

शिक्षिका

नाम : **नूपुर श्रीवास्तव 'नूपुर'**

जन्म तिथि : 26 अगस्त
जन्म स्थान : प्रयागराज
पिता : श्री राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव
माता : श्रीमती माया श्रीवास्तव
ई–मेल : nupur0870@gmail.com
मोबाइल : 9919138817

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : मिशन शिक्षण संवाद द्वारा 'काव्यधारा रत्न सम्मान', काव्यधारा व जन्म भूमि सेवा संस्था द्वारा 'काव्यधारा शिरोमणि सम्मान'

कल यादें थीं आज परिस्थितियाँ हैं

यादें तब की हैं जब रसोई से,
रिश्तों के रस की खुश्बू आती थी।
परिस्थितियाँ आज की हैं जब अपने किचन में भी
रिश्तों की कड़वाहट से घुटन होती है॥

यादें तब की हैं जब दादी बुआ के
आने पर घर चहचहाने लगता था।
परिस्थितियाँ आज की हैं
जब किसी के भी आने पर घर में,
किच-किच के शोर से गूँजने लगता है॥

यादें तब की हैं जब खुले आसमान के नीचे,
पूरे परिवार का बिस्तर लगता था।
परिस्थितियाँ आज की हैं जब AC कमरे में
दो लोगों को भी सुकून की नींद नहीं आती॥

यादें तब की हैं जब रिश्तों को,
एहसास के साथ जिया जाता था।
परिस्थितियाँ आज की हैं जब
रिश्ता निभाने से ज्यादा झेला जाता है॥

यादें तब की हैं जब
भावनाओं में भाव होता था।
परिस्थितियाँ आज की हैं जब
फीलिंग्स भी फील हो जाती हैं॥

जरा सोचिए यादें क्यों
परिस्थितियों में बदल गईं।
जरा गौर कीजिए रिश्तों की
यह रेत मुट्ठी से क्यों निकल गई॥

नूपुर श्रीवास्तव "नूपुर"
जौनपुर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **अर्चना पांडेय**

जन्म तिथि : 01 अप्रैल

जन्म स्थान : गाजियाबाद

पिता : श्री राधेश्याम पांडेय

माता : श्रीमती कुंती पांडेय

शिक्षा : एम.एस–सी. जीव विज्ञान, बी.एड. (Content Writing Course, International Institute Henry Harvin)

पत्राचार पता : Tower No. F-4, Flat No.306, Unihomes, Sector 117, NOIDA - 201306

मोबाइल : 9899581179

ईमेल : archanaraju291@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : नमस्कार, पिता सृष्टि, एहसास निर्माता, गर्भ में पलती बेटियाँ, समाज का प्रतिबिंब औरत, स्मृतियों की छाप, कदमों की उड़ान

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : दूरदर्शन पर शिक्षण व NCERT e-content में योगदान, स्टोरी मिरर भारतीय साहित्यिक वेब पोर्टल की राज्य प्रभारी एवं ब्रांड एंबेसडर, संपादक (प्रांजल टाइम्स साप्ताहिक अखबार), कई संस्थाओं के साथ दिव्यांग बच्चों के हितार्थ कार्य।

जिन्दगी उलझ सी गयी है

जिन्दगी उलझ सी गयी है
जिंदगी की धूप और छांव को,
सचमुच करीब से देखा है मैंने।
हृदय पर हुए घाव, पैर में पड़े छालों को,
हर बार पर्दे में रखा है मैंने ।
न जाने क्यों... कभी ये होठ कुछ कह नहीं पाए,
लफ्जों को दबी जुबान में, दबा कर रखा है मैंने।

उड़ने की ख्वाहिश किसे नहीं होती.....
पर जमाने की खोखली दरारों में,
अपने पंखों को उलझते हुए देखा है मैंने।
उठो बेड़ियाँ तोड़ झूम जाओ जमाने के तराने पर,
यूँ दूर से आती किसी आवाज को सुना है मैंने।

झूठे रिश्ते, झूठी रिवायत,
झूठी दरियादिली को देख अक्सर बुदबुदाती हूँ मैं,
इन्हें अपनी जिन्दगी का हिस्सा क्यों बनाऊँ।
मेरे दर्द मेरे छाले–मेरी दुनिया मेरे सपने
सब कुछ तो मेरे अपने हैं,
इनका किस्सा किसी को सुनाऊँ तो क्यों सुनाऊँ।

ख्वाहिशों की दस्तक को,
हर रोज अपनी पाजेब में सुनती हूँ मैं।

लिखूं तो क्या लिखूँ,
खुद ही खुद से लड़ती हूँ मैं।

लगता है पथरीले रास्तों से
पुराना कोई नाता है ।
तभी तो मंजिल से दूर रख
मुझे तड़पाता है।

कैसे तलाश करूँ मंजिल को मैं,
बार-बार इन राहों पर भटकती हूँ।
जिन्दगी उलझ-सी गयी है,
सुलझाने की बस जुगत ढूंढ़ती हूँ।

सुलझाने की बस जुगत ढूंढ़ती हूँ .....

अर्चना पांडेय
नोएडा

परिचय

कवि, लेखक, प्रेरक वक्ता

नाम : **अनिल अग्रहरि 'सागर'**

जन्म तिथि : 01 जनवरी, 1981
जन्म स्थान : बदलापुर (जौनपुर)
पिता : श्री राजेंद्र प्रसाद अग्रहरि
माता : श्रीमती शारदा देवी
शिक्षा : B. Sc., M. C. A.,
MIND Trainer & SKILL Trainer

पत्राचार पता : अनिल अग्रहरि 'सागर' पुत्र श्री राजेंद्र प्रसाद अग्रहरि, प्रयागराज रोड, बदलापुर (जौनपुर)
मोबाइल : 8858957685
ईमेल : ycpskilldevelopmentcompedu@gmail.com

वक्त रहते, जो संभल जायेंगे

खूबियाँ बखूबी जो आप जान जाओगे,
आप क्या हैं खुद को पहचान जाओगे।
अरे कुछ तो वक्त खुद को दे दो यारो, वर्ना कल.....
अपने ही शहर में अंजान बन जाओगे॥

वक्त रहते, जो संभल जायेंगे,
जिन्दगी में, मुकाम वो पायेंगे।
वक्त रहते जो, संभल जायेंगे,
जिन्दगी में, मुकाम वो पायेंगे॥

यूँ तो आयेंगी, मुसीबतें कई,
इनसे लड़ के, जो निकल जाएंगे।
जिन्दगी में, मुकाम वो पायेंगे,
वक्त रहते जो, संभल जायेंगे॥

यूँ ख्वाब सबके, हसीन होते हैं,
पर पूरा सभी, क्या कर पायेंगे।
जिन्दगी में, मुकाम वो पायेंगे,
वक्त रहते जो, संभल जायेंगे॥

छाया अपनों के, सर पे रहते,
कदम जिनके, न लड़खड़ायेंगे।
जिन्दगी में, मुकाम वो पायेंगे,
वक्त रहते जो, संभल जायेंगे॥

जिन्दगी के, इस सफरनामे में,
इल्म शामिल जो, कर जायेंगे।
जिन्दगी में, मुकाम वो पायेंगे,
वक्त रहते जो, संभल जायेंगे॥

अनिल अग्रहरि "सागर"
जौनपुर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **शीतल सैनी**

जन्म–तिथि : 17 दिसम्बर

जन्म–स्थान : मेरठ (उत्तर प्रदेश)

पिता : श्री तेजपाल सिंह सैनी

माता : श्रीमती कमलेश सैनी

शिक्षा : एम.एस–सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड., विशिष्ट बी.टी.सी.

पत्राचार पता : शीतल सैनी पत्नी श्री सत्यपाल सिंह
फ्लैट नं. 2, टाइप–4, BSNL कॉलोनी,
मेरठ रोड, हापुड़–245101, उत्तर प्रदेश

मोबाइल : 9568053068

ई–मेल : anant2914@gmail-com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : साझा संकलन–कोरोना काल में कविता, एहसास, प्रकृति के आंगन में, वागेश्वरी, हम भारतीय हैं, कृष्ण लीला, शरद पूर्णिमा, काव्य संगम

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : हिंदी गौरव सम्मान, मानस काव्य सुमन सम्मान, शिक्षक गौरव सम्मान (डी.डी. भारती नेटवर्क, राजस्थान), इंडियन बेस्टीज अवार्ड–2021, प्राइड वुमन ऑफ इंडिया अवार्ड–2021 व 2022, उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान

पतझड़

पतझड़ का जो मौसम आया,
मुरझा गए सारे पेड़।
जगह–जगह देखो लग गए,
सूखे पत्तों के ढेर।

कल जो पेड़ खड़ा था सीना तान,
आज वह मुरझा कर हुआ वीरान।
हवा सर्द है, मौसम खुश्क है,
सम्पूर्ण धरा को पतझड़ ने किया हैरान।

जीवन की कड़वी सच्चाई यही है,
आज जो हरा है, वो कल होगा बेजान।
कल तक जिनमें चहचहाती थी चिड़ियाँ,
वो बाग–बगीचे सब पड़े सुनसान।

आज शाखाएं टूटी पड़ी हैं,
पेड़ों के नीचे छाँव की कमी बड़ी है।
परिवर्तन है सृष्टि का विधान,
क्यों होना दु:खी और परेशान।

पुराना गिरकर, नया खिल उठेगा,
हर एक पत्ता नया बन उठेगा।
प्रत्येक मौसम की तरह यह भी बीत जाएगा,
खिलेंगी नई कोपलें,
देखो पुनः सब नया हो जाएगा।

शीतल सैनी
हापुड़

परिचय

शिक्षक

नाम	:	**रमेश यादव 'सागर'**
जन्म तिथि	:	12 मार्च 1972
जन्म स्थान	:	दुगौली, जौनपुर
पिता	:	स्व. राजपति यादव
माता	:	रामराजी देवी
शिक्षा	:	M. Sc. Ag (Hort.), SBTC
पत्राचार पता	:	दुगौली कला, तियरा (बदलापुर), जौनपुर–222125, उ. प्र.
मोबाइल	:	9455468176
ईमेल	:	rameshsagar8176@gmail.com

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : सरहद के सुर, माँ से ज्यादा तेरी पहचान क्या लिखूँ, वालिद की तलाश, कलाम को सलाम, अपनी भी जिंदगी ये, हिन्दी है हिदुस्तान, दिन हो या रैन, आवा चला तोहके पढ़इबे, बड़ा नीक लागे.....

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : अखिल राज्य ऑनलाइन काव्य संगोष्ठी 'परवाज' द्वारा सम्मान, 'काव्यधारा रत्न' व 'शिक्षा रत्न' सम्मान (मिशन शिक्षण संवाद), जन्मभूमि सेवा संस्था के तत्वावधान में मिशन शिक्षण संवाद द्वारा 'काव्यधारा शिरोमणि' सम्मान, ऑनलाइन काव्य मंच 'काव्यधारा' का संचालन व पत्रिका 'काव्यधारा संदेश' का सम्पादन, "द ब्रिटिश वर्ल्ड रिकार्ड" द्वारा प्रमाण पत्र

जीवन संगिनी

जीवन संगिनी हो, जीवन सजा देती हो।
खूबसूरत है ये दुनिया और खूबसूरत बना देती हो।

रोज ही होती शाम और रोज ही उजाला।
सर्वप्रथम रख नित्य तुम चाय का प्याला।
भोर की आहट सुना देती हो.....
जीवन संगिनी हो, जीवन सजा देती हो.....

शिकन ललाट की पढ़ती रहती हो दिन-रात तुम।
बोझिल कंधों पर रख पीछे से अपना हाथ तुम।
मैं हूँ ना - का साहस थमा देती हो.....
जीवन संगिनी हो, जीवन सजा देती हो.....

मशवरा तुम्हारा कि रूठते हैं तो आप रूठा करें।
लम्हों में मान जाएं बस एहसान इक अनूठा करें।
खुद-ब-खुद फासला तुम घटा देती हो.....
जीवन संगिनी हो जीवन सजा देती हो.....

बैठे आईने के आगे देखते हो प्यारा नूर तुम।
निहारते हमें भी आईने में, लगा के सिंदूर तुम।

भाल पर फिर चाँद को बिठा लेती हो.....
जीवन संगिनी हो, जीवन सजा देती.....

किलकारियों की जननी - सागर की नदिया हो तुम।
सोम की सौम्य सरिता - नेह का दरिया हो तुम।
हो महल मकां या फूस की कुटिया - रौनक बढ़ा देती हो.....
जीवन संगिनी हो, जीवन सजा देती हो.....

जीवन संगिनी हो, जीवन सजा देती हो।
खूबसूरत है ये दुनिया और खूबसूरत बना देती हो।

रमेश यादव "सागर"
जौनपुर

परिचय

शिक्षिका

नाम : **अनुराधा शर्मा 'अनु'**

जन्म तिथि : 09 सितम्बर

जन्म–स्थान : जिला फैजाबाद (अयोध्या)

पिता : स्व. श्री राजेन्द्र देव श्रोत्रिय

माता : स्व. श्रीमती सरोज शर्मा

शिक्षा : एम.ए. (संगीत गायन), बी.एड., विशिष्ट बी. टी. सी

पत्राचार पता : प्रवीण शर्मा, 79, बल्देवपुरी, महोली रोड, मथुरा, (उ. प्र.)

मोबाइल : 9411968341

साहित्यिक सौन्दर्य (सृजित/प्रकाशित) : बेटियाँ ये मेरी देश की शान हैं, आओ मिलकर के वृक्ष लगाएं, हम नारी हैं, हम भारत की फुलवारी हैं, लहरायेगा आज तिरंगा, पढ़ लिखकर के बनेंगे महान हम, यह वृद्धजन हमारे इन्हें मान दीजिये, कीमती है जिंदगानी (नशा मुक्ति गीत)

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : मिशन शिक्षण संवाद द्वारा शिक्षा रत्न सम्मान, बृजरज उत्सव प्रशस्ति प्रमाण पत्र, मिशन शक्ति अभियान सम्मान पत्र, धारा फाउंडेशन "नारी तू नारायणी" द्वारा प्रशस्ति पत्र, ब्रज तीर्थ परिषद् द्वारा गायन प्रशस्तिपत्र, संस्कार भारती द्वारा प्रशस्तिपत्र

प्रभु भक्त संवाद्

सपने में मेरे, आए थे भगवन
कहने लगे कहो भक्त कैसे हो भाई।
रहते थे तुम तो, सदा मुस्कुराते
उदासी ये चेहरे पे कैसी है छाई॥
सपने में मेरे .....

1. मैंने कहा प्रभु तुम हो अंतर्यामी,
क्या है छुपा तुमसे जगत के स्वामी।
कष्टों ने भारी, मुझको है घेरा,
समय ने यह कैसी चाल चलाई॥
सपने में मेरे .....

2. बोले प्रभु मुझसे, हिम्मत न हारो,
किये हैं जो कर्म अभी तक, उन्हें है विचारो।
कर्मों के फल यहाँ पर भोगने ही पढ़ते हैं,
जैसी हो करनी वैसी भरनी भाई ॥
सपने में मेरे .....

3. मैंने कभी ना किसी की आत्मा दुखायी,
परोपकारों में सदा ही वृत्ति लगायी।
सत्य की राहों पे, चलता रहा मैं,
कर्तव्यों से सदा ही दोस्ती निभायी॥
सपने में मेरे .....

4. प्रभु हँस के बोले तू है बहुत प्यारा,
गूढ़ रहस्य है ये वचन सुन हमारा ।
पिछले जन्म कुछ ऐसे, कर्म किये तूने उसका ही,
फल इस जन्म में भोगे हैं भाई ॥
सपने में मेरे .....

5. मैंने कहा प्रभु मुझको शरण में ले लो,
व्याकुल बहुत हूँ तसल्ली कुछ दे दो।
मुस्काये भगवन गले से लगाया,
अनूठी सी दिव्य शक्ति, मुझमें समायी॥
सपने में मेरे .....

6. कितनी ही विपदा आयें, न तुम डगमगाओगे,
मायूसी जब छायेगी, मुझे साथ पाओगे।
तेरी भक्ति ने, मुझको है लूटा,
तेरी दुश्वारियाँ अब मेरी हैं भाई॥
सपने में मेरे .....

अनुराधा शर्मा "अनु"
मथुरा

परिचय

शिक्षक

नाम : **प्रेमचन्द्र तिवारी 'प्रेम'**

जन्म तिथि : 05 अगस्त, 1971
जन्म स्थान : ककोहिया, रीठी, जौनपुर (उ. प्र.)
पिता : स्व. श्री माता प्रसाद तिवारी
माता : स्व. श्रीमती कमला तिवारी
शिक्षा : विज्ञान–गणित स्नातक, बी. एड

पत्राचार पता : ककोहिया, रीठी, जौनपुर–222131 (उ. प्र.)
मोबाइल : 8528802886
ईमेल : premjnp9544@gmail.com

प्रकाशित कृतियाँ : मन की तरंग (काव्य संग्रह), संवेदना (काव्य संग्रह), मेरी जमीन (उपन्यास)

सम्मान/पुरस्कार/उपलब्धि : काव्यधारा रत्न सम्मान (मिशन शिक्षण संवाद), सृजन साहित्यिक, सामाजिक संस्था कल्याण, मुम्बई सम्मान, अखिल भारतीय काव्य मंच सम्मान, काव्यधारा कवि सम्मेलन मुम्बई सम्मान, जन्मभूमि सेवा संस्था व काव्यधारा का ऑफ लाइन कवि सम्मेलन का सम्मान आदि

रावण

रावण तुम जीत गए होते,
बस धर्म का साथ निभाना था।
पर स्त्री को माँ-बहन समझ,
मानव का फर्ज निभाना था ।

तुमने तो पिता विश्रवा का,
मान, प्रतिष्ठा नष्ट किया।
तुमने ज्ञानी होकर भी,
पूरा जनमानस भ्रष्ट किया॥

हे ब्रह्मवेत्ता भूले क्यों ?
ब्राह्मण थे शास्त्र उठाना था।

तुम घमंड के साथ चले,
और अधर्म को अपनाया।
ब्रह्मांड जीतकर भी दशमुख
ब्राह्मण कुल राक्षस कहलाया।

समृद्धि मानसिक लानी थी,
और दीन-दुखी अपनाना था।

शक्तिमान की शक्ति तभी,
दुनिया में जानी जाती है।
जब उच्च कर्म ही होते हैं,
शीलता बखानी जाती है।

हे दशानन, हे लंकापति,
लोगों में प्रेम जगाना था।

प्रेम चन्द्र तिवारी "प्रेम"
जौनपुर